हिंदी कहानी

और

भूमंडलीकरण

वेदप्रकाश सिंह

हिंदी कहानी और भूमंडलीकरण

वेदप्रकाश सिंह

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2022

© *वेदप्रकाश सिंह*

ISBN: 978-93-92465-02-4

अनुक्रम

भूमिका	3
भूमंडलीकरण का अर्थ और उसका स्वरूप	18
भूमंडलीकरण की संस्कृति का स्वरूप और प्रभाव	111
हिंदी कहानी और भूमंडलीकरण की संस्कृति-1	174
हिंदी कहानी और भूमंडलीकरण की संस्कृति-2	269
हिंदी कहानी और भूमंडलीकरण की संस्कृति-3	386

भूमिका

भूमंडलीकरण की विश्व व्यवस्था जिस संस्कृति का निर्माण कर रही है उसे वर्तमान कहानी विभिन्न रूपों में दिखा भी रही है और उसका विरोध भी कर रही है। यह विरोध पूँजीवादी समाज व्यवस्था की बुराइयों के विरोध की परंपरा में है। जिस तरह शोषण का वर्तमान रूप शोषण के पुराने रूप की परंपरा में है उसी तरह हिंदी कहानी समेत अन्य विधाओं में वर्तमान भूमंडलीकरण के बहुराष्ट्रीय पूँजीवाद के विरोध की भी एक परंपरा दिखाई पड़ती है। इस समयावधि में जितनी विपुल मात्रा में कहानियाँ लिखी गई हैं उतनी संभवतः इससे पहले एक साथ देखने में नहीं आई। यह बात हो सकता है आपको सच न लगे। लेकिन पिछले इन बीस-बाईस वर्षों में कहानियों और कहानीकारों की एक बड़ी संख्या हमें देखने को मिलती है। पत्रिकाओं ने इसी अवधि विशेष में न जाने कितने कहानी विशेषांक-महाविशेषांक निकाले। न जाने कितने कवि कविता छोड़ कहानी लेखन की दुनिया में आ चुके हैं। कहानी में युवा वर्ग की इस अपूर्व मौजूदगी को रेखांकित करने के लिए पद ही चल पड़ा है- युवा कहानी। लेकिन यह समय केवल कहानी और युवा रचनाकारों का ही नहीं है।

इस समय अन्य विधाओं में भी विपुल मात्रा में लेखन हो रहा है। कहानीकारों की भी एकाधिक पीढ़ियाँ एक साथ रचनारत हैं। इसमें जहाँ एक ओर नयी कहानी के दौर के रचनाकार कहानी लिख रहे हैं। वहीं बिल्कुल आज के कहानीकार भी

सक्रिय हैं। नयी कहानी के दौर के विष्णु प्रभाकर, शेखर जोशी, कृष्णा सोबती, विद्यासागर नौटियाल, राजेंद्र यादव आदि बड़े रचनाकार इस समयावधि में रचनारत रहे हैं। विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ 'रक्त-दान', 'इन्सानियत' (2003), 'तुम मेरी माँ हो' 'वह लड़की' (2004), 'जननी और माँ' (2005) कृष्णा सोबती की कहानी 'ऐ लड़की', शेखर जोशी की 'विडुआ', विद्यासागर नौटियाल की 'फट जा पंचधार' और राजेंद्र यादव की कहानी 'नया फ्लैट' (2005) आदि कहानियाँ इसी समयावधि (1990 से 2005) के बीच में आती हैं। ज्ञातव्य है कि विष्णु प्रभाकर की प्रसिद्ध कहानी 'धरती अब भी घूम रही है' 1954 में प्रकाशित हो चुकी थी। वहीं राजेंद्र यादव की पहली कहानी 'प्रतिहिंसा' 1947 में प्रकाशित हो चुकी थी। जया जादवानी, राकेश कुमार सिंह, अल्पना मिश्र, पंकज मित्र, वंदना राग, प्रभात रंजन, रवि बुले, कविता, मोहम्मद आरिफ, कैलाश वानखेड़े, गीताश्री, जयश्री रॉय, चंदन पाण्डेय, कुणाल सिंह, विमलचंद्र पाण्डेय, अजय नावरिया, सोनाली सिंह, ज्योति कुमारी, मज़्कूर आलम आदि कहानीकार भी सामने आये जो इसी (1990 से 2013 के) दौर में लिखना शुरू करते हैं।

इस अवधि में प्रकाशित कहानियों की संख्या इतनी अधिक है कि इन्हें एक अध्ययन में शामिल करना बेहद कठिन है। इस दौर में छोटी-बड़ी सभी पत्रिकाओं में छपी कहानियों के शीर्षक और रचनाकार के नामों को अगर एक साथ रख भर दिया जाए तो भी एक किताब के पन्ने कम पड़ जाएं। इसमें अतिशयोक्ति नहीं है। 'हंस'

पत्रिका के सन् 1990 के एक साल के अंक में ही छोटी-बड़ी 86 कहानियाँ प्रकाशित हुईं। अब इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि अन्य सभी पत्रिकाओं में छपी कहानियों की संख्या कितनी ज्यादा हो सकती है। ऐसे में काम भर की कहानियों को ही किताब में शामिल करने की कोशिश की गयी है। केवल प्रवृत्ति को सामने लाने में सहायक कहानियों को ही यहाँ शामिल किया गया है। अधिकांश महत्त्वपूर्ण कहानियों को शामिल करने के लोभ का भी संवरण करना पड़ा है। विषय को सामने रखने में जितनी कहानियों की जरूरत पड़ी केवल उन्हें ही शामिल किया गया है। कहीं- कहीं एक साथ कई कहानियों को आमने सामने रखकर मूल विषय पर बात की गयी है। हाँ 'नेम ड्रापिंग' और उद्धरण बहुलता के दोष से बचने की भरसक कोशिश की गयी है। जिन कहानियों का नामोल्लेख किया गया है उन पर ठहरकर विचार भी किया गया है। ऐसा प्रयास एकाध स्थलों को छोड़कर सभी जगह देखने को मिलेगा। भूमंडलीकरण क्या है, उसकी संस्कृति क्या है, जिसे हम संस्कृति मानते आये हैं उस संस्कृति से यह किस रूप में भिन्न है। इस नवनिर्मित भूमंडलीकरण की संस्कृति का समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, क्या वह साहित्य में अपनी मौजूदगी दिखा रही है, यहाँ हमने कहानी विधा तक अपने को सीमित रखते हुए भूमंडलीकरण की संस्कृति के प्रभाव को जानने-समझने का प्रयास किया है।

यहाँ पर भूमंडलीकरण किसे कहते हैं, इस पर बात की गयी है। भूमंडलीकरण